वैदिक विज्ञान की ओर .....

13

वर्तमान में जो वैज्ञानिक ईश्वर की सत्ता को मानते हैं, वे वैज्ञानिक अनुसंधान करते समय तो अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा का प्रयोग करते हैं परन्तु ईश्वर के विषय में वे कुछ भी नहीं विचारते। वे सोचते हैं कि यह कार्य धार्मिक विद्वानों का है। ऐसा मानकर बड़े-२ वैज्ञानिक नाना अंधविश्वासों व रूढ़ियों के जाल में फंसे देखे जाते हैं। शायद वे सोचते हैं कि ईश्वर व जीवात्मा जैसे विषय विज्ञान का विषय नहीं है, क्योंकि इन पर कोई प्रयोग, प्रेक्षण व गणित कार्य नहीं करेगा। उधर, जो धार्मिक माने जाने वाले विद्वान् वर्तमान विज्ञान पढ़ते हैं, तब वे भी कॉलेज व विश्वविद्यालयों में तो वैज्ञानिक बुद्धि का उपयोग करते है, नाना प्रकार से तर्क व संवाद करते हैं परन्तु जब वे अपने सम्प्रदाय की चर्चा करते हैं अथवा पूजा-इबादत-प्रार्थना कर रहे होते हैं, उस समय वे अपनी बुद्धि का कुछ भी उपयोग नहीं लेते, क्योंकि वे मानते हैं कि धर्म विषय में वैज्ञानिक बुद्धि, तर्क व ऊहा की कोई आवश्यकता नहीं है। धर्म केवल आस्था व विश्वास का ही विषय है, जो पृथक्-२ व्यक्तियों वा व्यक्तियों के समूहों के लिए पृथक्-२ हो सकता है। वे बाजार में सामान खरीदते समय दुकानदार से पर्याप्त तर्क-वितर्क करते हैं, शाक-सब्जी खरीदने में भी सतर्क रहते हैं कि कहीं कोई खराब सब्जी न आ जाए, परन्तु जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु **'धर्म'** के विषय में बुद्धि को सर्वथा बन्द करके अपने-२ कथित धर्मग्रन्थ, मौलवी, पादरी, पण्डित, साधु अथवा कोई भी धर्मगुरु की मिथ्या बातों को तुरन्त ही मान लेते हैं। वे उन मिथ्या बातों के प्रति ऐसे कट्टर हो जाते हैं कि उसके विपरीत एक शब्द भी सुनने को तैयार नहीं होते, बल्कि इसके लिये खून बहाने के लिए भी तैयार रहते हैं। वे अपने-२ कथित धर्मग्रन्थों, साम्प्रदायिक नियमों व धर्म गुरुओं पर कभी शंका ही नहीं करते बल्कि वे शंका करने, उन पर तर्क-वितर्क करने को पाप मानते हैं। यह दुर्दशा सभी सम्प्रदायों में देखी जाती है।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक